पाठ - 7 **फरवरी 10 - 16**

परमेश्वर के साथ सत्यनिष्ठा

सब्त अपराह्न **फरवरी 10**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : लूका 16:10, लैव्य० व्य० 27:30, उत्प० 22:1-12, इब्रा० 12:2, लूका 11:42, इब्रा० 7:2-10, नहेमायाह 13।

याद वचन : *"पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो वचन सुनकर भले और उत्तम मन में सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल लाते हैं"(लूका 8:15)।*

एक खरा हृदय क्या है, और यह किस प्रकार प्रकट होता है? आधुनिक संस्कृति बहुधा सत्यनिष्ठा को अज्ञात, सापेक्षवादी नीति के तौर पर देखती है; अधिकतर लोग कभी-कभी बेईमान होते हैं परन्तु इसे ग्रहण योग्य माना जाये जब तक कि यह उतना अधिक उल्लंघन न हो। खास परिस्थितियों में भी यह दावा किया जाता है, किसी बेईमानी को न्यायोचित ठहराया जा सकता है।

सत्य और ईमानदारी हमेशा साथ हैं। यद्यपि हम ईमानदार होने की प्रवृत्ति के साथ नहीं जन्में; यह सीखी गई नैतिक सद्गुण है और एक भण्डारी के नैतिक चरित्र का मुख्य भाग है।

जब हम ईमानदारी का अभ्यास करते हैं अच्छी चीजें इससे आने लगती हैं। उदाहरण के लिये, झूठ में पकड़े जाने की कभी चिंता नहीं या तथ्य छुपाने की जरूरत पड़े। इस कारण और अधिक, ईमानदारी एक मूल्यवान व्यक्तिगत विशेषता है, खास कर कठिन परिस्थितियों के तहत जब प्रलोभन बेईमानी की ओर सहज होता है।

इस सप्ताह के पाठ में हम दशमांश देने के अभ्यास के द्वारा ईमानदारी के आत्मिक विचार का अध्ययन करेंगे और देखेंगे क्यों दशमांश देना भण्डारी और भण्डारी पर के लिये अति महत्त्वपूर्ण है।

रविवार **फरवरी 11**

सहज ईमानदारी का विषय

एक चीज हम सबके साथ सामान्य है वह यह कि हम बेईमानी को पसंद नहीं करते। हम खासकर इसे उस समय पसंद नहीं करते जब हम दूसरों में इसे उजागर होते देखते हैं। यद्यपि इसे हमारे स्वयं में देख सहज नहीं है और जब हम करते हैं, हमारे कार्य को तर्कसंगत ठहराने को हम प्रवृत होते हैं, उन्हें सही

- सब्त फरवरी 17 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

ठहराने के लिए, उनके महत्त्व को कम आंकने के लिये: ओह यह उतनी बुरी नहीं है; यह केवल छोटी-सी बात है, वाकई उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। अधिकतर हम खुद बेवकूफ बन जाते हैं परन्तु परमेश्वर को कभी बेवकूफ नहीं बना सकते।

"हमारी हर पदवी में बेईमानी अभ्यास्त की जाती है, और बहुतों के लिये यह गुनगुनेपन का कारण बन जाता है जो सत्य को मानने (विश्वास करने) की वकालत करते हैं। वे मसीह से जुड़े हुए नहीं हैं और अपनी आत्माओं को धोखा दे रहे हैं।"– एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 4, पेज 310.

पढ़ें लूका 16: 10, यीशु कौन से महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को यहाँ पर प्रकट करता है जो हमें यह देखने में मदद करना चाहिए कि "छोटी चीजों" में भी विश्वस्त रहना क्यों महत्त्वपूर्ण है?

_____

_____

परमेश्वर जानता है कि हम कितनी सहजता से बेईमान हो सकते हैं, खासकर जब उन चीजों की बात होती है जिसके हम मालिक हैं। इस प्रकार उसने हमें बेईमानी और स्वार्थ के लिये एक शक्तिशाली विषहरण औषधि दी है, कम से कम तब जब यह भौतिक अधिकारों का विषय होता है।

पढ़ें लैव्य० 27: 30 एवं मलाकी 3: 8, ये पद क्या सिखलाते और किस प्रकार जिस विषय पर बातें करते हैं, हमें ईमानदार होने में मदद करते हैं?

_____

_____

"कृतज्ञता या उदारता के लिये कोई अपील नहीं। यह सहज ईमानदारी का विषय है। दशमांश प्रभु का है; और वह जो कुछ भी उसका है, हमें वापस करने का आदेश देता है . . . यदि ईमानदारी व्यावसायिक जीवन का एक अहम सिद्धांत है, क्या हमें परमेश्वर के प्रति हमारे ऐहसान को पहचानना नहीं चाहिए ऐहसान जो हरएक को अंतर्निहित कर देता है?"– एलेन जी०ह्वाईट, एजुकेशन पेज 138, 139.

दशमांश देना किस प्रकार आप को याद करने में मदद करता है कि जो कुछ भी आपका है, आखिरकार किसका है? कभी न भूलना क्यों महत्त्वपूर्ण है कि जो भी हमारा है आखिर किसका है?

सोमवार **फरवरी 12**

विश्वास का जीवन

पढ़ें उत्पत्ति 22: 1-12, अब्राहम के विश्वास की वास्तविकता के विषय यह कहानी हमें क्या बतलाती है।

विश्वास का जीवन एक बार की घटना नहीं है। शक्तिशाली ढंग से विश्वास हम एक बारगी प्रकट नहीं करते, और इस प्रकार सिद्ध करते हैं कि हम सचमुच अनुग्रह द्वारा जीवित वफादार और विश्वस्त मसीही हैं और मसीह के खून से छिपा लिये गये हैं।

उदाहरण के लिये, धार्मिक संसार अभी भी हजार साल के अवशेषों के साथ मोरियाह पर्वत पर इसहाक के साथ अब्राहम द्वारा प्रदर्शित विश्वास के कार्य पर आश्चर्य करता है (उत्पत्ति 22) तथापि विश्वास का यह कार्य वैसा कुछ नहीं जो कि अब्राहम ने जब चाहा इसे किया। विश्वसनीय और आज्ञापालन का उसका जीवन पहले ही से तैयार था जिसने उसे ऐसा करने को सामर्थ्य दिया। यदि इस घटना से पूर्व वह विश्वासयोग्य नहीं रहता, वह इस परीक्षा में कभी सफल न होता। प्रश्न ही नहीं उठता कि ऐसे विश्वास का एक मनुष्य निश्चय ही इस घटना के बाद भी याद किया जाता है।

आशय यह है कि एक भण्डारी का विश्वास एक बार का कार्य नहीं है। अधिक समय तक यह या तो गहरा और मजबूत होता जायेगा या खोखला और कमजोर होता जायेगा, यह उस दावा करने वाले पर निर्भर करेगा जो इस विश्वास का अभ्यास करता है।

पढ़ें इब्रानी 12: 2, हमारे विश्वास के स्रोत के विषय यह हमें क्या बतलाता है और किस प्रकार विश्वास लाया जाये?

विश्वस्त भण्डारियों के तौर पर एकमात्र सहारा "और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुःख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा" (इब्रा० 12: 2), शब्द "सिद्ध करने वाला" नये नियम में केवल इस दृष्टान्त में प्रयोग किया गया है, इसका अनुवाद (Finisher से perfecter) सिद्ध करने वाला भी हो सकता है। इसका अर्थ है कि यीशु हमारे विश्वास को परिपक्वता और पूर्णता में

लाने की इच्छा रखता है (इब्रा० 6:1-2), इस प्रकार विश्वास, विश्वास का जीवन एक सक्रिय अनुभव है: यह बढ़ता है, यह परिपक्व होता है, और इसमें बृद्धि होती है।

किस तरीके से आपने अपने विश्वास को अधिक समय तक बढ़ते और परिपक्व होते देखा है? अथवा यह है?

मंगलवार **फरवरी 13**

विश्वास की एक अभिव्यक्ति

जैसा हमने कल देखा, विश्वास एक प्रक्रिया है, एक सक्रिया अनुभव है जो आदर्शत: बढ़ता और परिपक्व होता है। और एक तरीके से परमेश्वर हमारे विश्वास को सिद्ध कर रहा है और इसे पूर्णता की ओर ले जा रहा है और यह दशमांश देने के काम के द्वारा हो रहा है। उचित रूप से समझा गया, दशमांश जो परिमेश्वर को लौटाया जाता है वैध नहीं; जब हम दशमांश देते हैं स्वर्ग के लिये हमारा रास्ता न हम बना रहे हैं और न ही खोज रहे हैं। बल्कि दशमांश देना विश्वास की अभिव्यक्ति है। यह हमारे विश्वास की वास्तविकता का वाह्य, दृश्यमान और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है।

आखिरकार कोई भी परमेश्वर पर विश्वास का दावा कर सकता है, और यीशु पर भी विश्वास करने का दावा कर सकता है। जैसा कि हम जानते हैं, "दुष्टात्मा भी परमेश्वर पर विश्वास करते हैं (याकूब 2:19), परन्तु आपके कमाई का दस प्रतिशत लेना और परमेश्वर को वापस करना? यह विश्वास का काम है।

पढ़ें लूका 11:42, इसका क्या अर्थ है जब यीशु कहता है कि दशमांश देना छूटना नहीं चाहिए? किस प्रकार दशमांश व्यवस्था के वजनदार विषयों को संबंध करता है?

_____

_____

दशमांश देना परमेश्वर पर निर्भर रहने की एक विनीत अभिव्यक्ति है और भरोसे का एक कार्य कि मसीह हमारा मुक्तिदाता है। यह पहचान है कि हम पहले ही आशीषित हो चुके हैं "मसीह में सब प्रकार की आशीष" और अधिक की प्रतिज्ञा।

पढ़ें उत्पति 28:14-22, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के प्रति याकूब की क्या प्रतिक्रिया थी?

"परमेश्वर की योजना में दशमांश देने की विधि इसकी सादगी और समानता में सुंदर है। विश्वास और साहस में सब अपने गिरफ्त में ले सकता है क्योंकि इसके मूल में यह ईश्वरीय है। इसमें सादगी और उपयोगिता शामिल है, और इसे समझने और कार्यान्वित करने के लिये सीखने की गहराई की आवश्यकता नहीं है। उद्धार के बहुमूल्य काम को आगे बढ़ाने में सब कोई अपने योगदान को महसूस कर सकते हैं। प्रत्येक पुरुष, स्त्री, युवा, परमेश्वर के लिये कोषाध्यक्ष हो सकता है, और खजाने की मांग को पूरी करने के कारक हो सकते हैं।"– एलेन जी० ह्वाईट, कौन्सिल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 73.

किस तरीके से आपने स्वयं के लिये सच्ची आत्मिक आशीषों को ढूंढ़ा है जो दशमांश देने से आती है? दशमांश देना आपके विश्वास को बढ़ाने में किस प्रकार मदद करता है?

बुधवार **फरवरी 14**

ईमानदार दशमांशः प्रभु के लिये पवित्र

हम अकसर परमेश्वर को दशमांश देने की बात करते हैं। परन्तु हम परमेश्वर को कैसे देते हैं परन्तु हम परमेश्वर को कैसे देते हैं जिसका वह पहले ही से मालिक है?

पढ़ें लैव्य० 27: 30, दशमांश के संबंध में कौन-से दो महत्त्वपूर्ण विन्दु इस पद में पाये जाते हैं?

"दशमांश प्रभु का है और इसलिये यह पवित्र है। यह प्रतिज्ञा या अभिषेक की क्रिया द्वारा पवित्र नहीं होता। अपने स्वभाव के द्वारा यह सामान्यतयः पवित्र है; यह प्रभु का है। इस पर परमेश्वर के सिवाय किसी का अधिकार नहीं है। कोई भी इसे परमेश्वर के लिये अभिषेक नहीं कर सकता, क्योंकि दशमांश एक व्यक्ति की सम्पत्ति का हिस्सा कभी नहीं होता।" – एंजेल मैनुएल रोडरिग्ज, स्टीवार्डशिप रूट्स, पेज 52.

हम दशमांश को पवित्र नहीं बनाते हैं; पद के हिसाब से परमेश्वर इसे पवित्र करता है। उसे वह अधिकार है। भण्डारियों के तौर पर हम जो उसका है उसे वापस करते हैं। दशमांश एक विशेष काम के लिये परमेश्वर को समर्पित है। किसी दूसरे कार्य हेतु इसे रोकना (रखना) बेईमानी है। पवित्र दशमांश को वापस करने का अभ्यास कभी टूटना नहीं चाहिए।

पढ़ें इब्रानी 7: 2-10, अब्राहम का मलिकिसिदक को दशमांश देने का पौलुस का वर्णन किस प्रकार दशमांश देने के एक गहरा अभिप्राय को प्रकट करता है? अब्राहम वास्तव में किसे दशमांश दे रहा था?

_____

_____

इस प्रकार जैसा सब्त पवित्र है, वैसा ही दशमांश भी पवित्र है। शब्द "पवित्र" का अर्थ है "पवित्र व्यवहार के लिये अलग करना।" सब्त और दशमांश इस प्रकार जुड़े हुए हैं। हम सातवाँ दिन सब्त को धार्मिक और पवित्र रूप में अलग करते हैं; और हम दशमांश को परमेश्वर की धार्मिक सम्पत्ति के तौर पर जो पवित्र है अलग करते हैं।

"परमेश्वर ने सातवें दिन को पवित्र किया है। समय का वह खास भाग स्वयं परमेश्वर द्वारा धार्मिक उपासना के लिये अलग किया गया है, जब प्रथम बार हमारे सृष्टिकर्ता द्वारा पवित्र किया गया, आज भी इसकी पवित्रता जारी है।

"इसी रीति से हमारी आमदनी का दशमांश परमेश्वर के लिये पवित्र है। नया नियम दशमांश की व्यवस्था पर पुन: कानून नहीं बनाता है, जैसा कि सब्त के साथ ऐसा नहीं हो सकता; क्योंकि दोनों की वैधता मान ली गई है, और इनके गहरे आत्मिक महत्त्व को विश्लेषित किया गया है. . . जबकि हम मनुष्य के तौर पर विश्वस्तपूर्वक परमेश्वर को समय देना चाहते हैं जिसे उसने अपने लिये आरक्षित किया है, क्या हम अपने साधनों के भाग में से भी उसे न दें जिसे वह दावा करता है?" – एलेन जी० ह्वाईट, कौन्सिल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 66.

आपके हृदय और मन में इस ऐहसास को जीवित रखने में मदद हेतु आप क्या कर सकते हैं कि आपका दशमांश वास्तव में "पवित्र" है?

बृहस्पतिवार **फरवरी 15**

जागृति, सुधार, और दशमांश देना

हिजकियाह का लम्बा शासन यहूदा की जाति के लिये सुनहरे क्षण के रूप में गिना जाता है। दाऊद और सुलैमान के शासन से इस्राएल ने परमेश्वर की आशीष का इतनी महानता से आनन्द नहीं लिया था। 2इतिहास 29-31 में जागृति और सुधार का हिजकियाह का रिकार्ड है: "जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था वैसा ही उसने भी किया" (2इति० 29: 2), "यहोवा के भवन में की उपासना ठीक की गई" (2इति० 29: 35), फसह का पर्व रखा गया। (2इति० 30: 5), "यरूशलेम में बड़ा आनन्द हुआ" (2इति० 30: 26),

विधर्मी मूर्तियों, वेदियों एवं ऊँचे स्थानों को नष्ट किया गया (2इति० 31:1), हृदय की आकस्मिक जागृति और अभ्यास का सुधार, जो दशमांश और दानों की बहुलता का परिणाम है (2इति० 31:4-5, 12)।

नहेमियह जागृति, सुधार, एवं दशमांश देने का दूसरा उदाहरण देता। पढ़ें नहेमियह 9:2-3, हृदय की जागृति का क्या अर्थ हुआ? पढ़ें नहेमियह 13, नहेमियह ने "परमेश्वर के भवन" का सुधार करने के बाद, यहूदा के लोग वहाँ पर क्या लाए (नहे० 13:4, नहे० 13:12)?

_____

_____

"जागृति और सुधार दो अलग चीजें हैं। जागृति आत्मिक जीवन के एक नवीकरण को मन और हृदय की शक्तियों के एक त्वरित करवाई को, आत्मिक मृत्यु से एक जागृति को महत्त्व देता है। सुधार एक पुनर्गठन को, विचारों और सिद्धान्तों, आदतों एवं अभ्यासों को संकेत करता है।"– एलेन जी० ह्वाईट, क्रिश्चियन सर्विस. पेज 42.

जागृति, सुधार, एवं दशमांश देने के बीच संबंध स्वत: है। दशमांश की वापसी के बिना, जागृति एवं सुधार गुनगने हैं, यदि पूरी तरह यह एक जागृति है। बहुधा हम मसीहियों के तौर पर बगल की पंक्तियों में बेकार खड़े रहते हैं जबकि हमें सक्रिय सहभागिता के साथ परमेश्वर के पक्ष में होना है। जागृति और सुधार वचनबद्धता की मांग करते हैं और दशमांश देना उस वचनबद्धता का भाग है। यदि हम परमेश्वर से संकोच करते हैं जो वह हम से मांगता है, हम उम्मीद नहीं कर सकते जो हम उसे माँगते वह जवाब दे।

जागृति और सुधार चर्च के अंदर होता है इसके बाहर नहीं (भजन० 85:6)। हमें जागृति के लिये परमेश्वर को ढूंढ़ना चाहिए (भजन० 80:19) और सुधार की "जिन चीजों को तूने पहले किया" (प्रका० 2:5), एक जागृति हम क्या रखते हैं और हम परमेश्वर को क्या वापस करते हैं के संबंध में होनी चाहिए।

यह कर्म नहीं है जो फर्क लाता है, वरन मन का निर्णय और भावना है जो प्रयोजन और वचनबद्धता को प्रकट करते हैं। परिणाम विश्वास में बढ़ती, तेज आत्मिक दृष्टि, और नवीकृत ईमानदारी होगी।

शुक्रवार **फरवरी 16**

अतिरिक्त विचार : पमेश्वर ने सभी वाचाओं को जो बाईबल में उल्लेखित हैं प्रारंभ किया और अपने लोगों को इन वाचाओं में लाने का कार्य शुरू कर

दिया है (इब्रा० 8: 10), वाचा प्रतिज्ञाएँ उसके अनुग्रह, प्रेम, और हमें बचाने की चाह को प्रतिबिम्बित करते हैं।

परमेश्वर के साथ वाचा बहुत-सी चीजों को शामिल करती है: परमेश्वर एक प्राप्तकर्त्ता, वाचा की शर्तें, दोनों पक्षों द्वारा शर्तों के प्रति वचनबद्धता, वाचा के मानने में असफलता पर उल्लेखित दण्ड, और इच्छित परिणाम या इच्छित नतीजा। दशमांश देने का विचार मलाकी 3: 9-10 में इन घटकों को दर्शाता है। यह पद परमेश्वर और अपने भण्डारियों के बीच दशमांश देने की खास वाचा को दुहराता है। जब हम ऐसी वाचा में प्रवेश करते हैं, यह एक दृश्यमान संकेत है जिसे हम उपभोक्तावाद के भौतिक सिद्धान्तों का विरोध करते हैं, और हम सिद्ध करते हैं कि एक परिवर्तित, पापमय हृदय से कुछ अच्छाई निकल सकती है।

"एक बंद, स्वार्थी आत्मा मनुष्य को, परमेश्वर को जो उसका खुद का है देने से रोकती है। परमेश्वर ने मनुष्य के साथ खास वाचा बांधी कि यदि वे लगातार मसीह के राज्य की बढ़ोतरी के लिये नियुक्त भाग को अलग करते हैं, परमेश्वर उन्हें बहुतायत से आशीषित करेगा, ताकि उसके उपहारों को प्राप्त करने के लिये जगह न हो। परन्तु यदि मनुष्य उसे रोक देता है जो परमेश्वर का है, परमेश्वर स्पष्ट रूप से घोषणा करता है, 'तुम लोग स्राप से शापित।'" -एलेन जी० ह्वाईट, कौन्सिल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 77.

परमेश्वर के साथ वाचा संबंध में रहना जिम्मेदारियाँ हैं। हम वाचा की प्रतिज्ञाओं का आनन्द लेते हैं, परन्तु अकसर हम आदेशों और जिम्मेदारियों को नपसंद करते हैं। तथापि, इस संदर्भ में, वाचा दो पक्षीय तालमेल है, और दशमांश देना वाचा के अधीन हमारे जीने का एक भाग है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न :

1. दशमांश वापस करना हमारे भाग में विश्वास का एक महत्त्वपूर्ण कार्य क्यों है?
2. किसी के लिये आप कौन से शब्द चाहेंगे जो कहता है, "मैं दशमांश, नहीं दे सकता"? एक व्यक्ति जो स्वयं को इस हालत में पाता है आप उसे कैसे मदद करते हैं? और शब्दों के अतिरिक्त उसे मदद के लिये क्या कुछ किया जा सकता है?
3. बुधवार का अंतिम प्रश्न उस विषय में पूछा गया था कि आपके सामने ऐहसास को कायम रखने में मदद हेतु आप क्या कर सकते हैं कि दशमांश पवित्र है। आपके कुछ जवाब क्या थे? यह तथ्य कि यह पवित्र है किस प्रकार आपके इसे देने के संबंध को प्रभावित करता है?